सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

“पंच–गौरव” जिला–सीकर

जिला प्रशासन–सीकर

सीकर एक दृष्टि में

मद	विवरण
क्षेत्रफल एवं स्थिति	
1.क्षेत्रफल	7745.12
2.स्थिति (क) अक्षांश	27.21′ से 28.12′उत्तरी
(ख)देशान्तर	74.44′ से 75.25′पूर्व
जनसंख्या	
पुरूष	1374990
स्त्री	1302343
योग	2677333
जनसंख्या घनत्व	346
कुल साक्षरता दर	71.91
पुरूष	85.11
स्त्री	58.23
प्रशासनिक सरंचना	
उपखण्ड़	11
तहसील	13
उप तहसील	3
पंचायत समिति	12
कुल ग्राम पंचायतें	373
कुल राजस्व ग्राम	1214
कुल नगर	12
नगरपरिषद	03
नगरपालिका	09

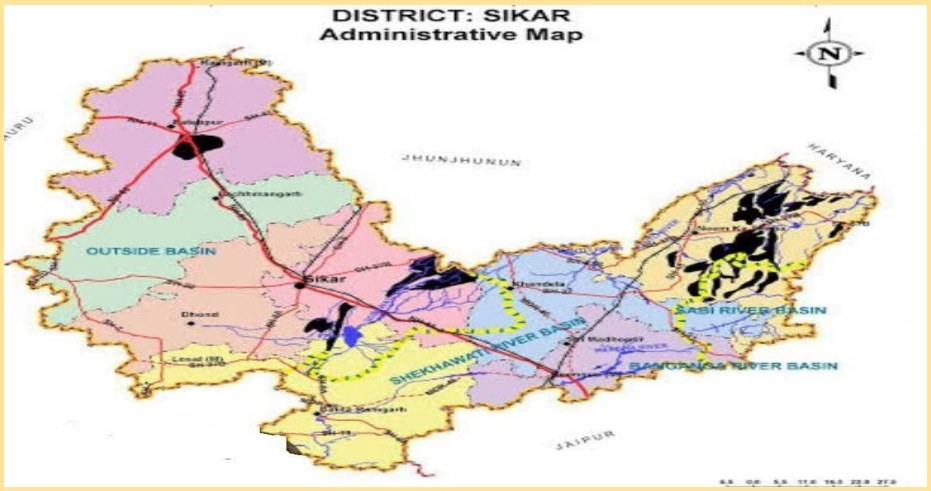

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

संदेश

राज्य सरकार के सफलतम एक वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के समस्त जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है जिसके अर्न्तगत प्रत्येक जिले में **पंच–गौरव** का चयन किया गया है।

सीकर जिले में पंच गौरव कार्यक्रम के अर्न्तगत **एक जिला एक प्रजाति– अरडू, एक जिला एक खेल– बास्केटबॉल, एक जिला एक उपज– प्याज, एक जिला एक उत्पाद– लकड़ी के फर्नीचर** तथा **एक जिला एक पर्यटन– खाटूश्यामजी** का चयन किया गया है। जिला प्रशासन सीकर द्वारा संबंधित विभागों के माध्यम से इन पंच गौरव के क्षेत्र में कार्य योजना बनाकर उल्लेखनीय प्रयास करते हुए जिले को विकास की ओर अग्रसर करने का कार्य किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि सीकर जिले के पंच गौरव पर आधारित यह पुस्तिका जिलेवासियों सहित यहां आने वाले पर्यटकों को जिले के पंच गौरव के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराने में उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं सभी जन प्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों, मीडियाकर्मियों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं आमजन से अपील करता हूँ, कि जिला प्रशासन सीकर द्वारा पंच गौरव के इतिहास, लाभों, अग्रिम कार्ययोजना एवं छायाचित्रों का समावेश करते हुए पंच गौरव सीकर पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पुस्तिका से जिले के सर्वांगीण विकास एवं लोक कल्याणकारी योजना का लाभ प्राप्त करने में सहयोग प्रदान होगा। इस सकारात्मक सोच के साथ सहयोग कर जिले को राज्य में अग्रणी बनाया जायेगा।

जिला प्रशासन की ओर से संबंधित विभाग एवं सांख्यिकी विभाग तथा अधीनस्थ कार्मिकों, जिनके सहयोग से पंच गौरव पुस्तिका का प्रकाशन हुआ है, समस्त को हार्दिक शुभकामनाएं।

(मुकुल शर्मा)
I.A.S.
जिला कलक्टर, सीकर

एक जिला–एक उत्पाद– लकड़ी के फर्नीचर

राज्य सरकार द्वारा सभी जिलों के पंचमुखी विकास के लिए पंच गौरव कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रत्येक जिले के पांच तत्वों पर ध्यान केन्द्रित किया जाना है। इन पांच तत्वों में सीकर जिले में एक जिला एक उत्पाद हेतु लकड़ी के फर्नीचर का चयन किया गया है। शेखावाटी के केन्द्र में स्थित विशेष रूप से रामगढ़ शेखावाटी, सीकर शिल्प कौशल के रूप में अपनी एक पहचान रखता है।

रामगढ़ क्राफ्ट्स में फर्नीचर को कुशल कारिगरों द्वारा सावधानीपूर्वक हस्तनिर्मित किया जाता है, जिन्हे लकड़ी के काम की सदियों पुरानी तकनीक और रहस्य विरासत में मिले है। रामगढ़ शेखावाटी के कारीगर केवल शिल्पकार ही नहीं है, अपितु कहानीकार भी है जो कि कच्ची लकड़ी के टुकड़ों को कला के रूप में परिवर्तित कर देते है।

उत्पाद की जानकारी– इस क्षेत्र में लगभग 50 इकाईयां स्थापित है जिनमें से 5 इकाईयों द्वारा सीधा निर्यात किया जाता है शेष इकाईयो द्वारा निर्यातकों को एवं स्थानीय बाजार में उत्पाद का विक्रय किया जाता है।

निर्यात किये जाने वाले प्रमुख हस्तशिल्प उत्पाद– Cabinet, Side-boards, Coffee table, side table, book shelf, Almira, Tv Stand, Chairs etc.

प्रमुख उत्पाद के प्रकार –

1. *Brass Bakhra Design*
2. *Jharokha Design*
3. *Brass Panel Design*
4. *Carving Design*
5. *Ful Patti Carving Design*

प्रमुख इकाईयां–

1. *The Art Place*
2. *The Home Dekor*
3. *Shekhawati Craft*
4. *Soni Hendicraft*
5. *Satyun Handicraft.*

राजस्थान एक जिला एक उत्पाद पॉलिसी के तहत हस्तशिल्प फर्निचर के नवीन उद्यमों के लिए प्रावधान–

1. सूक्ष्म उद्यमों को 25 प्रतिशत मार्जिन मनी अनुदान (अधिकतम सीमा 15 लाख रू.)
2. लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत मार्जिन मनी अनुदान (अधिकतम सीमा 20 लाख रू.)
3. उद्यमों में अत्याधुनिक तकनीकी/सॉफ्टवेयर हेतु वित्तीय प्रोत्साहन।
4. क्वालिटी सर्टिफिकेशन तथा स्टैण्डर्ड प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहन।
5. तकनीकी उन्नयन हेतु प्रोत्साहन
6. ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर उद्यम संचालन हेतु प्रोत्साहन।
7. राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लेने पर विपणन सहायता।
8. दस्तकारों/हस्तशिल्पियों/उद्यमियों को पैकेजिंग संबंधी प्रशिक्षण।

एक जिला–एक खेल– बास्केटबॉल

जिले के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर **एक जिला–एक खेल** के अर्न्तगत **बास्केटबॉल** का चयन हुआ है। जिसका संचालन जिला स्टेडियम सीकर में किया जा रहा है।

राजस्थान में बास्केटबॉल खेल प्रचलित खेलों में से एक है। सीकर जिले को बास्केटबॉल खेल कि नर्सरी के रूप मे जाना जाता है जिसमें सब जूनियर, यूथ जूनियर, सीनियर ओपन एवं स्कूलीय, विश्वविद्यालय, खेलों इंडिया, यूथ गेम्स में राज्य, राष्ट्रीय एव अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में जिले के खिलाड़ियों ने प्रतिनिधित्व करते हुए मेडल प्राप्त कर सीकर जिले का मान सम्मान बढा कर गौरवान्वित किया है।

बास्केटबॉल खेल से सीकर जिले के प्रतिभावान खिलाड़ी जिन्होंने देश के लिए प्रतिनिधित्व कर प्रदेश व जिले का नाम रोशन किया जिनकी सूची निम्नानुसार हैं –

☐ श्री नथु सिंह–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री रामचन्द्र सिंह–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ स्व. राधेश्याम जी बिजारणिया	अर्जुन पुरुस्कार
☐ श्री जोरावर सिंह	ओलंपियन
☐ श्री नथु सिंह–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री रामचन्द्र सिंह–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ स्व. इरफान अलि गौड –	अंतर्राष्ट्रीय
☐ मो. इकबाल पठान–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री शिव कुमार मिश्रा –	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री मांगीलाल खेदड़ –	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री गजेन्द्र सैनी –	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री रणजीत सिंह बगड़िया–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री मान सिंह –	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री नवनीत सिंह–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री मोहम्मद शाहिद–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री भूपेन्द्र सिंह चौहान–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री राजेन्द्र सिंह चौहान–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री कामरान खान–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री लोकेन्द्र सिंह शेखावत–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री जयदीप सिंह राठौड़–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री लोकेश शर्मा–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री नवनीत यादव–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री जयदीप सिंह राठौड़–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री शरद दाधीच–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री हिरेन्द्र सिंह–	अंतर्राष्ट्रीय
☐ श्री केशव शर्मा –	अंतर्राष्ट्रीय

पंच गौरव के तहत ब्लॉक स्तरों का विवरण निम्न प्रकार से हैं जिसके माध्यम से बास्केटबॉल खेल को प्रोत्साहन मिलेगाः–

ब्लॉक	पंचायत समिति मे प्रशिक्षण लेने के स्थान व नाम	आवश्यक खेल सामग्री	प्रातः व सांयकालीन प्रशिक्षण प्राप्त खिलाड़ी हेतु उपलब्ध बालक–बालिकाओ की संख्या
धोद	काशी का बास, दुजोद (धोद)	बास्केटबॉल–20 (6 व 7 नंबर),कोन, स्किपिंग रोप	40
लक्ष्मणगढ़	नेहरू स्टेडियम, लक्ष्मणगढ़	बास्केटबॉल–20 (6 व 7 नंबर),बास्केटबाल प्रशिक्षक	40
नेछवा	काछवा स्कूल,नेछवा	बास्केटबॉल–20 (6 व 7 नंबर)	10
पलसाना	रा.उ.मा.वि., पलसाना	बास्केटबॉल–20 (6 व 7 नंबर)	40
पिपराली	रघुनाथगढ़, पिपराली	बास्केटबॉल–20 (6 व 7 नंबर)	20
श्रीमाधोपुर	श्रीमाधोपुर शहर	बास्केटबॉल–20 (6 व 7 नंबर)	10

इसी क्रम मे राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा जिला स्टेडियम सीकर मे बास्केटबॉल खेल के लिए आवासीय बास्केटबॉल खेल अकेडमी भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर हैं जो माह मई 2025 मे पूर्ण करवाने के पश्चात् खेल अकेडमी शुरू कर दी जाएगी जिसमे खिलाड़ियों को रहना, खाना, खेल किट तथा प्रशिक्षण की सुविधाये राजस्थान सरकार द्वारा उपलब्ध करवायी जाएगी।

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– अरडू

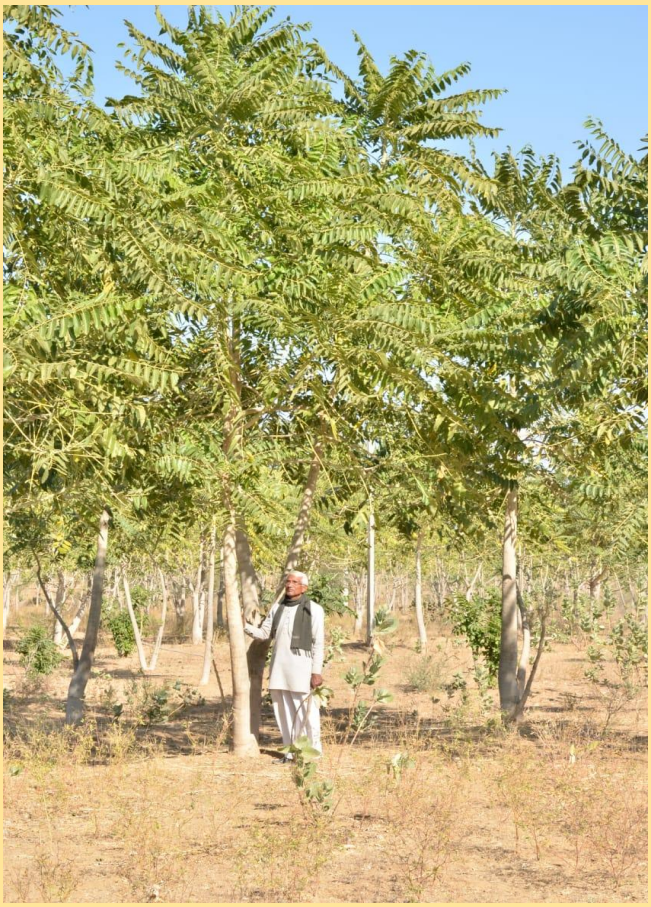

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढोतरी कर प्रदेश में सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में प्रत्येक जिले ''पच गौरव'' के रूप में एक जिला एक वनस्पति प्रजाति One DistrictOne Specie के तहत सीकर जिले में अरडू के पौधें का चयन किया गया है। अरडू को भारत की उत्पति माना जाता है। इसे महानिंब और महारूख नाम से जाना जाता है। अग्रेजी भाषा में इसे 'इंडियन ट्री ऑफ हेवन' कहते है। अरडू एक तेजी से बढ़ने वाला, पर्णपाती और बड़े आकार का पेड़ है। यह 18 से 25 मीटर तक लम्बा हो सकता है। अरडू के फूल जनवरी से मार्च के महीने में गुच्छों में आते है। इसके फल (समारा) बरसात से पहले पक जाते है तथा बहुत हल्की होने के कारण हवा द्वारा फैल जाते है। इसके पत्ते बड़े आकार के होते है। सींचित भूमि से 50 से 75 टन/है. अरडू से लकड़ी का उत्पादन लिया जा सकता है। अरडू के सूखे हुए 1 कि.ग्रा. बीजों की संख्या 9500–10000 तक होती है। बुआई के बाद बीज 25–30 दिन में उगते है तथा इसके ताजा बीजों की संख्या 70–80 प्रतिशत अंकुरण दर होती है। अरडू के बीज की शक्यता सामान्यतया 6 माह तक होती है।

अरडू का महत्व और उपयोग :–

ग्रामीण अंचल में कृषि वानिकी के माध्यम से अरडू प्रजाति को विकसित करके आजीविका बढ़ायी जा सकती है, साथ ही साथ चारे और जलाऊ लकड़ी के इस्तेमाल से भी आर्थिक लाभ लिया जा सकता है। इसकी कच्ची पत्तियों के बजाय पकी/परिपक्व पत्तियों का चारा बनाना अधिक लाभप्रद होता है। अरडू की लकड़ी वजन में हल्की होती है इससे खिलौन तथा अन्य लकड़ी के समान बनाये जाते है। देश में बढ़ती हुई लकड़ी की मांग की आपूर्ति के लिए राजस्थान में अरडू बहुत अच्छा विकल्प है और यह राजस्थान की रेतीली मिट्टी में अच्छा पनपता है। किसान तथा अन्य विभाग इसका व्यावसायिक उत्पादन करके प्लाइवुड उद्योग तथा लकड़ी के बॉक्स पैकिंग/बॉक्स उद्योग को आपूर्ति कर सकते है। इसकी लकड़ी को जलाऊ के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है।

वन विभाग द्वारा अरडू प्रजाति को बढावा देने हेतु किये जाने वाली गतिविधियां :–

1. **पौध तैयारी** :– सीकर जिले में वन विभाग, सीकर के अधीन वन पौधशालाओं में लगभग 3.00 लाख अरडू के पौधे तैयार किये जा रहे है।
2. **आमजन की सहभागिता** :– जिले में राजकीय/गैर राजकीय संस्थाओं स्काउट गाईडस, सामाजिक संगठनों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थाओं एवं आमजन व अन्य द्वारा उपलब्ध स्थानों पर पौधारोपण किया जाकर उनका संरक्षण किया जाएगा। स्थानीय लोगों के अरडू वृक्ष के महत्व इसके उपयोग और पर्यावरणीय स्थिरता में इसकी भूमिका के बारे में शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान आयोजित किये जायेगे।
3. **स्वयं सहायता समूहों के बढावा देना** :– वन विभाग द्वारा आयोजित पर्यावरण दिवस, वन महोत्सव, हरियाली तीज जैसे हर कार्यक्रम में JFMC's /SHG's के द्वारा स्टॉल लगवाये जायेगे जिससे आमजन में अरडू के प्रति जागरूकता फैलाई जा सके।
4. **अरडू पार्क विकसित करना** :– ईकोलॉजी पार्क एवं पक्षी विहार नानी, सिटी नेचर पार्क फतेहपुर, ईकोलॉजी पार्क लक्ष्मणगढ एवं स्मृति वन सीकर में अरडू थीम पर आधारित ईको पार्क स्थापित किये जायेगे ताकि पर्यटन को बढावा दिया जा सके एवं वृक्ष के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा की जा सके।
5. **कृषि वानिकी** के तहत किसानों को अरडू अधिक लगाने हेतु प्रोत्साहित करना।
6. प्रति वर्ष **जिला स्तरीय कार्यशाला** का आयोजन कर आमजन एवं कृषकों को अरडू की खेती की पूर्ण जानकारी देना।
7. जिले में सभी रेंजों में **अवेरनेस कैम्प** लगाकर कर आमजन एवं कृषकों को जागरूक करना।
8. **प्रचार–प्रसार एवं नुक्कड़ नाटक** के माध्यम से अरडू अधिक से अधिक लगाने हेतु जागरूक करना।
9. स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर **वृक्षारोपण** करना।
10. **वन महोत्सव एवं हरियाली तीज पर केम्पेन** चलाकर अधिक से अधिक अरडू के पौधों का रोपण करना।
11. प्रत्येक जिला स्तरीय कार्यशालाओं में रेंज स्तरीय कार्यशालाओं में भाग लेने वाले अतिथियों एवं सम्मानित अतिथिगणों को उपहार स्वरूप **अरडू के पौधे भेट** किये जायेगे।
12. अरडू पौध तैयारी, संधारण, अरडू वाटिका निर्माण, प्रचार–प्रसार इत्यादि गतिविधियों हेतु 200.00 लाख के प्रस्ताव भिजवाये गये है।

अपेक्षित परिणाम :–

1. सीकर जिले में कृषि वानिकी के रूप में अरडू वृक्षों की संख्या में वृद्धि ।
2. अरडू के उत्पादों के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में बढोतरी/सुधार।
3. जैव विविधता और पर्यावरणीय स्वास्थ्य में सुधार।
4. समुदाय में जागरूकता बढाना और महिलाओं को सशक्त बनाना।
5. किसानों के द्वारा अरडू के व्यावसायिक उत्पादन में बढ़ोतरी से प्लाईवुड एवं लकड़ी की मांग की पूर्ति।
6. वन आधारित औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि।

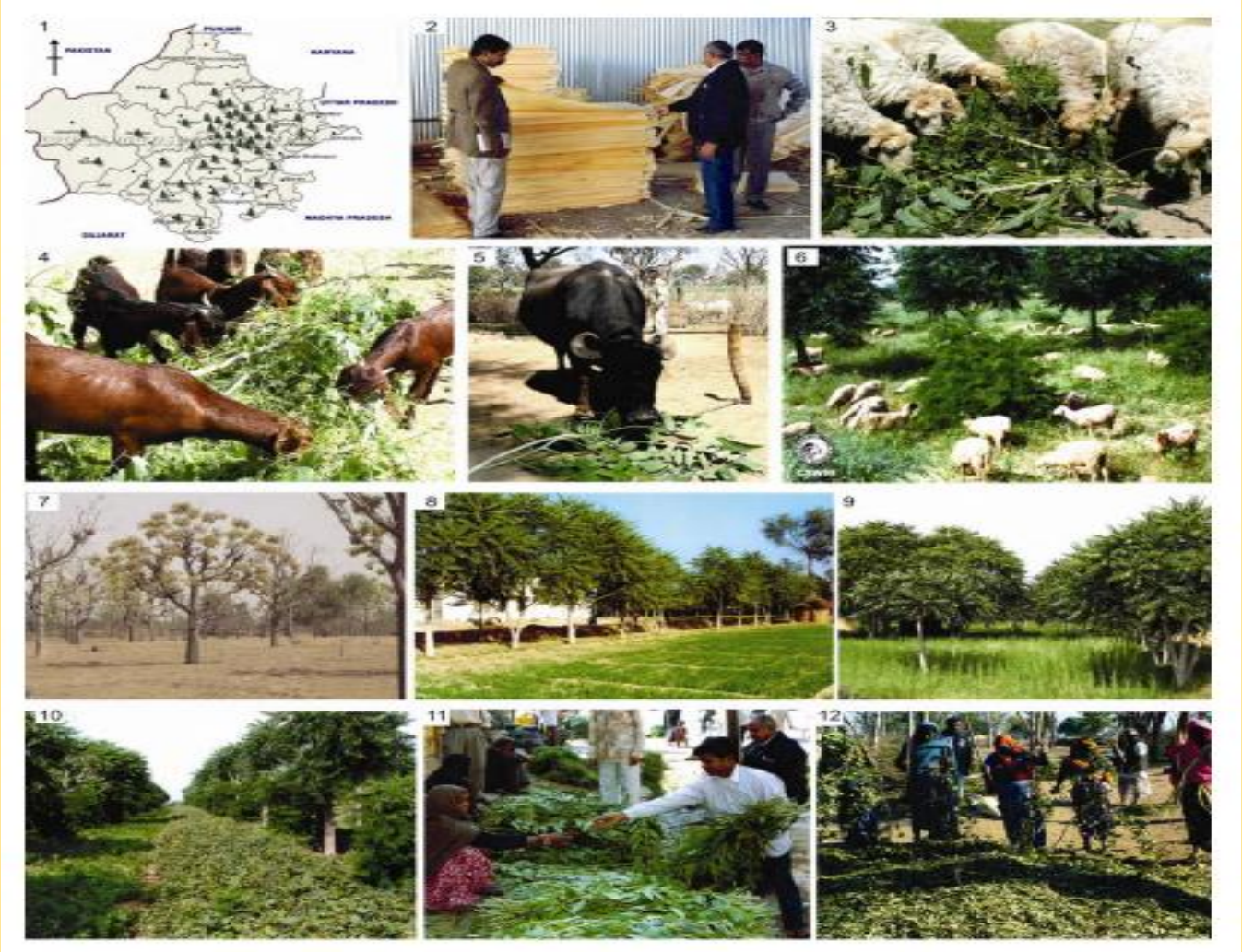

एक जिला–एक उपज –प्याज

जिले के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर **एक जिला–एक उपज** के तहत **प्याज** का चयन हुआ है। जिले में प्याज फसल के लिये मृदा एवं पानी की अनुकुलता होने के कारण प्याज नगदी फसलों में प्रमुख स्थान रखती है। जिले में उत्पादित प्याज आकार में बड़ा एवं मीठेपन की विशेषता के कारण देशभर में जिले से उत्पादित प्याज की मांग बढ़ती जा रही है।

किसानों को अधिक आय हेतु उद्यान विभाग द्वारा किसानों को प्याज भण्डारण हेतु भण्डारण संरचना के निर्माण पर लागात का 50 प्रतिशत एवं अधिकतम अनुदान 87500 रूपये का प्रावधान है। विभाग द्वारा प्याज फसल में सूक्ष्म सिंचाई संयंत्रों की स्थापना पर लागत का 70–75 प्रतिशत अनुदान देय है।

कम लागत प्याज भण्डारगृह संरचना

वैज्ञानिक विधि से प्याज का भण्डारण करे तथा अधिक आमदनी/मूल्य प्राप्त करे

अनुमानित लागत राशि	रुपये 175000
अनुदान राशि	50 प्रतिशत अथवा अधिकतम रु. 87500/–
आकार	लम्बाई–40 फीट तथा चौडाई–12 फीट
	उंचाई– मध्य में 10 फीट एवं साईडों में 6 फीट
भण्डारण क्षमता	25 मैट्रिक टन
भण्डारण अवधि	3 माह तक

प्याज की उन्नत किस्में	आर.ओ.–1, पूसा रेड, पूसा रतनार, एन 2–4–1, एग्री फाउन्ड लाईट रेड
बुआई का समय	अक्टूबर–नवम्बर
बीज दर प्रति है0	8 – 10 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर
उत्पादन प्रति है0	250 से 350 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर

- जिले के किसानों को प्याज की वैज्ञानिक खेती के बारे में जानकारी देने के लिए कृषि एवं उद्यान विभाग द्वारा कार्यशाला/ सेमिनार/प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जाये इनमें प्याज के भण्डारण एवं विपणन बाजार की संभावना पर विस्तृत जानकारी दी जायेगी।
- प्याज बाजार में लम्बे समय तक उपलब्धता बनाये रखने के लिए अगेती नर्सरी तैयारी हेतु 1000 वर्गमीटर के शेडनेट हाउस पर अनुदान प्रस्तावित है।
- प्याज फसल में पानी की बचत हेतु मिनि स्प्रिंकलर के उपयोग को बढ़ावा दिया जायेगा

जिला–एक पर्यटन स्थल– खाटूश्यामजी

जिले में पर्यटन में बढोतरी एवं प्रदेश में सर्वांगीण विकास हेतु जिले में **''पंच– गौरव''** के रूप में **एक जिला–एक पर्यटन स्थल** के तहत सीकर जिले में **खाटूश्यामजी** का चयन किया गया है। खाटूश्याम जी मन्दिर का निर्माण 11वीं शताब्दी में हुआ था। खाटूश्यामजी का मंदिर राजपूती शैली का अद्भुत उदाहरण है। खाटूश्यामजी मंदिर का निर्माण सफेद संगमरमर से हुआ है जो इसकी भव्यता को दर्शाता है। खाटूश्यामजी का मंदिर, राजस्थान के सीकर जिले में स्थित, न केवल पौराणिक कथा से जुड़ा हुआ स्थल है बल्कि एक ऐसा तीर्थ स्थल है जहाँ विशेषकर फाल्गुन मेले में लाखों श्रद्धालु अपनी श्रद्धा के साथ रींगस से पैदल चलकर पहुंचते हैं।

खाटूश्यामजी मंदिर की पौराणिक कथा

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, महाभारत की लड़ाई शुरू होने से पहले, बर्बरीक की वीरता बेजोड़ थी। उसने कमजोर पक्ष का पक्ष लेने का फैसला किया था ताकि वह न्यायपूर्ण रह सके, एक ऐसा निर्णय जिसके परिणामस्वरूप दोनों पक्षों का पूर्ण विनाश हो जाता और केवल बर्बरीक ही जीवित बचता। ऐसा कहा जाता है कि ऐसे विनाशकारी परिणामों से बचने के लिए, श्री कृष्ण ने बर्बरीक से उसका शीश दान करने के लिए कहा, जिसके लिए वह तुरंत सहमत हो गये। श्री कृष्ण उसके प्रति दिखाए गए समर्पण और बर्बरीक के महान बलिदान से बेहद खुश हुए और उन्होंने उसे वरदान दिया, जिसके अनुसार बर्बरीक को कलियुग (वर्तमान समय) में कृष्ण के अपने नाम, श्याम जी से जाना जाएगा और उनके ही रूप में पूजा जाएगा। ऐसा कहा जाता है कि जो भक्त सच्चे मन से उनका नाम लेते हैं, उन्हें आशीर्वाद मिलता है और उनकी परेशानियाँ दूर होती हैं।

श्यामकुंड, खाटूश्यामजी

मंदिर के पास एक पवित्र तालाब है जिसे श्याम कुंड कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि यहीं से खाटू श्याम जी का सिर निकाला गया था। भक्तों के बीच एक लोकप्रिय मान्यता है कि इस तालाब में डुबकी लगाने से व्यक्ति की बीमारियाँ दूर हो जाती हैं और उसे अच्छा स्वास्थ्य मिलता है। भक्ति भाव से लोग तालाब में डुबकी लगाते हैं। यह भी माना जाता है कि हर साल आयोजित होने वाले फाल्गुन मेला महोत्सव के दौरान श्याम कुंड में स्नान करना विशेष रूप से लाभकारी होता है।

खाटूश्यामजी मंदिर की वास्तुकला

सफेद संगमरमर से निर्मित यह मंदिर वास्तव में एक अद्भुत वास्तुशिल्प है। भक्तों के बीच एक लोकप्रिय स्थल होने के अलावा, कई लोग मंदिर की संरचना की सुंदरता को आश्चर्य से देखने के लिए आते हैं। बड़े प्रार्थना कक्ष का नाम जगमोहन है और यह दीवारों से घिरा हुआ है, जिस पर विस्तृत रूप से चित्रित पौराणिक दृश्य हैं। जबकि प्रवेश और निकास द्वार संगमरमर से बने हैं, संगमरमर के ब्रैकेट में सजावटी पुष्प डिजाइन हैं, गर्भगृह के शटर एक सुंदर चांदी की चादर से ढके हुए हैं जो मंदिर की भव्यता को बढ़ाते हैं।

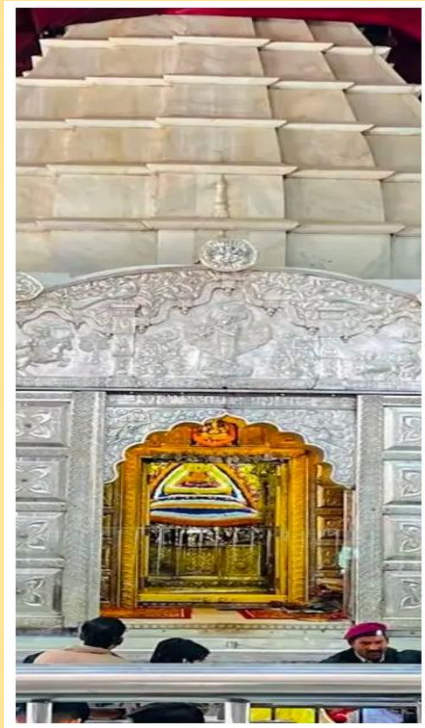

पर्यटन विभाग द्वारा खाटूश्यामजी को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में बढावा देने के लिए की जाने वाली गतिविधियां :–

खाटूश्यामजी को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में बढावा देने के लिए पर्यटन विभाग की वेबसाईट और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर खाटूश्यामजी के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी।

खाटूश्यामजी जाने वाले पर्यटकों के लिए बेहतर यातायात सुविधाए सुनिश्चित की जाएगी।

खाटूश्यामजी के विभिन्न मुख्य स्थलों यथा– तोरण–द्वार, बस स्टेण्ड, रेलवे स्टेशन रींगस एवं सूचना केन्द्र पर साईनेजेज एवं लॉकर व्यवस्था, पेयजल कियोस्क, शौचालय आदि सुविधाओं का विकास।

खाटूश्यामजी में एक पर्यटन सूचना केन्द्र स्थापित किया जायेगा जहॉ पर्यटकों को हर प्रकार की जानकारी मिल सके जैसे दर्शन के समय, आस–पास के पर्यटन स्थल, खाने–पीने के स्थान आदि। यह केन्द्र स्थानीय संस्कृति, इतिहास और धार्मिक महत्व पर आधारित जानकारी भी प्रदान करेगा।

खाटूश्यामजी धाम में पर्यटकों की संख्या अधिक होने पर वहॉ सुरक्षा व्यवस्थाओं को बेहतर किया जायेगा। इसके साथ ही स्वच्छता को बढावा देने के लिए नियमित सफाई और कूड़ा प्रबंधन की व्यवस्था की जायेगी।